कायस्थ पुस्तिका

श्री चित्रगुप्त पूजा विधि (Chitragupta Pooja Vidhi)

भगवान चित्रगुप्त जी के हाथों में कर्म की किताब, कलम, दवात और जल है। ये कुशल लेखक हैं और इनकी लेखनी से जीवों को उनके कर्मों के अनुसार न्याय मिलता है। कार्तिक शुक्ल पक्ष द्वितीया तिथि को भगवान चित्रगुप्त की पूजा का विधान है। इस दिन भगवान चित्रगुप्त और यमराज की मूर्ति स्थापित करके अथवा उनकी तस्वीर रखकर श्रद्धा पूर्वक सभी प्रकार से फूल, अक्षत, कुमकुम, सिन्दूर एवं भांति भांति के पकवान, मिष्टान एवं नैवेद्य सहित इनकी पूजा करें और फिर जाने अनजाने हुए अपराधों के लिए इनसे क्षमा याचना करें। यमराज और चित्रगुप्त की पूजा एवं उनसे अपने बुरे कर्मों के लिए क्षमा मांगने से नरक का फल नहीं भोगना पड़ता है। इस संदर्भ में एक कथा का यहां उल्लेखनीय है।

श्री चित्रगुप्त जयंती

कायस्थ भाई दूज के दिन श्री चित्रगुप्त जयंती मनाते हैं। इस दिन पर वे कलम, दवात पूजा (कलम, स्याही और तलवार पूजा) करते हैं, जिसमें कलम, कागज और पुस्तकों की पूजा होती है। यह वह दिन है जब भगवान श्री चित्रगुप्त और यमराज अपने कर्तव्यों से मुक्त हो, अपनी बहन देवी यमुना से मिलने गये, इसलिए इस दिन पूरी दुनिया भैयादूज मनाती है और कायस्थ श्री चित्रगुप्त जयंती मनाते हैं।

कायस्थ पुस्तिका

श्री चित्रगुप्त भगवान जी स्तुति

जय चित्रगुप्त यमेश तव, शरणागतम शरणागतम।
जय पूज्य पद पद्मेश तव, शरणागतम शरणागतम।। 2
जय देव देव दयानिधे, जय दीनबन्धु कृपानिधे।
कर्मेश जय धर्मेश तव, शरणागतम शरणागतम।। 2
जय चित्र अवतारी प्रभो, जय लेखनी धारी विभो।
जय श्याम तन चित्रेश तव, शरणागतम शरणागतम।। 2
पूर्वज भगवत अंश जय, कायस्थ कुल अवतंश जय।
जय शक्ति बुद्धि विशेष तव, शरणागतम शरणागतम।। 2
जय विज्ञ शाश्वत धर्म के, ज्ञाता शुभाशुभ कर्म के।
जय शांति न्यायाधीश तव, शरणागतम शरणागतम।। 2
जय दीन अनुरागी हरि, चाहे दया दृष्टि तेरी।
कीजै कृपा करुणेश तव, शरणागतम शरणागतम।। 2
तव नाथ नाम प्रताप से, नर जाय छुट भय ताप से।
हों दूर सर्व क्लेश तव, शरणागतम शरणागतम।। 2

कायस्थ पुस्तिका

भगवान श्री चित्रगुप्त पूजन विधि

ॐ नमो भगवते चित्रगुप्त देवाय का आवाहन करते हुये धूप, दीप, चन्दन, लाल पुष्प से पूजन करें श्रद्धानुसार नैवैद्य, खील, भुने चनें, मिठाई, ऋतुफल का प्रसाद चढायें। एक कलम बिना चिरी लेकर दवात में पवित्र जल छिडकते हुये प्रभु को ध्यान करें।

स्वास्थिवाचन

ॐ गणना त्वां गणपति हवामहे, प्रियाणां त्वांण प्रियपत हवामहें निधीनां त्वांल निधिपते हवामहें वसो मम आहमजानि गर्भधामा त्व्मजासि गर्भधम ।
ॐ गणपत्या्दि पंचदेवा नवग्रहा: इन्द्रादि दिग्पाषला: दुर्गादि महादेव्य: इहागच्छत स्वकीयां पूजां ग्रहीत भगवत: चित्रगुप्त देवस्य पूजमं विध्नरहितं कुरूत।

ध्यान

तच्छ री रान्मरहाबाहुस्श्या म कमल लोचनस्कम्वु।
ग्रीवोगूढ शिर: पूर्ण चन्द्रो निभानन:।।
काल दण्डोस्वोप वसो हस्तो लेखनी पत्र संयुत:।
निस्मत्य दर्शनेतस्थौद ब्रहमणोत्वुयक्त जन्मन:।।
लेखनी खड्गहस्तेग च मसि भाजन पुस्तक:।
कायस्थ कुल उत्पन्न चित्रगुप्त नमो नम:।।
मसी भाजन संयुक्तपश्चरोसि त्वं महीतले ।
लेखनी कठिन हस्तेत चित्रगुप्त नमोस्तुहते।।
चित्रगुप्त नमस्तुतभ्यं लेखकाक्षर दायक ।
कायस्थ जाति मासाद्य चित्रगुप्त मनोस्तुते।।
योषात्वपया लेखनस्य जीविकायेन निर्मिता ।
तेषा च पालको यस्भात्रत: शान्ति प्रयच्छ मे।।

आवाहन

दोनो हाथ जोडकर प्रभु चित्रगुप्त जी से प्रार्थना कीजिये के हे प्रभु जब तक मैं आपकी पूजा करूं तब तक प्रभु आप यहां विराजमान रहिये।

ॐ आगच्छ भगवन्देदव स्था्ने चात्र स्थिरौ भव ।
यावत्पूजं करिष्यामि तावत्वं सन्निधौ भव ।
ॐ भगवन्तंभ श्री चित्रगुप्त आवाहयामि स्थापयामि ।।

कायस्थ पुस्तिका

आसन

हे प्रभु चित्रगुप्तदेव आपका सेवक आपके समक्ष यह आसन समर्पित करता है, कृपया इसे स्वीकार करें :

ॐ इदमासनं समर्पयामी । भगवते चित्रगुप्त देवाय नमः ।।

पाद्य

हे प्रभु चित्रगुप्त आपके चरण कमल धोने के लिये मैं जल समर्पित करता हूं इसे स्वीकार करें :

ॐ पादयोः पाद्यं समर्पयामी । भगवते चित्रगुप्त देवाय नमः ।।

आचमन

हे देवाधिदेव प्रभु चित्रगुप्त भगवान यह पवित्र जल आचमन के लिये प्रस्तुत करता हूं इसे स्वीकार करें :

ॐ मुखे आचमनीयं समर्पयामि । भगवते चित्रगुप्तापय नमः ।।

स्नान

हे सनातन देव आप ही जल है, पृथ्वी है, अग्नि और वायु है यह सेवक जीवन रूपी जल आपके स्नान हेतु समर्पित करता है इसे स्वीकार करें :

ॐ स्नासनार्थ जलं समर्पयामि । भगवते श्री चित्रगुप्ताय नमः ।।

वस्त्र

हे देवादिदेव, प्रभु चित्रगुप्त जी आपके चरणों में यह सेवक तुच्छ वस्त्र भेंट करता है इन्हें स्वीकार कीजियें :

ॐ पवित्रों वस्त्रं समर्पयामि । भगवते श्री चित्रगुप्त देवाय नमः ।।

पुष्प

हे परम उत्तम दिव्य महापुरूष प्रभु चित्रगुप्त भगवान आपके श्री चरणों में यह सेवक सुगन्धित पुष्प अर्पित करता है इन्हे स्वीकार कीजियें :

ॐ पुष्परमालां च समर्पयामि । भगवते श्री चित्रगुप्त देवाय नमः ।।

धूप

हे अर्न्तयामी देव आपके श्री चरणों में यह सेवक सुगन्धित धूप प्रस्तुत करता है, इसे स्वीकार कीजियें :

ॐ धूपं माधापयामि । भगवते श्री चित्रगुप्त देवाय नमः ।।

कायस्थ पुस्तिका

दीप

हे देवादिदेव उत्तम प्रकाश से युक्त अंधकार को दूर करने वाला धृत एवं बत्तीयुक्त दीप आपके श्री चरणों में प्रकाशमान है इसे स्वीकार कीजिये।

ॐ दीपं दर्शयामि । भगवते श्री चित्रगुप्त देवाय नमः

नैवैद्य

हे प्रभु चित्रगुप्त जी आपके श्री चरणों में स्वादिष्ट शुद्ध, मधुर फलों से युक्त नैवैद्य समर्पित करता हूं, इन्हें स्वीकार कीजियें ।

ॐ नैवैद्य समर्पयामि । भगवते श्री चित्रगुप्त देवाय नमः ।।

ताम्बूल (दक्षिणा)

हे प्रभु चित्रगुप्ताजी आपके श्री चरणों में ताम्बूंल एवं दक्षिणा समर्पित करता हूं, इन्हें स्वीकार कीजिये ।

ॐ ताम्बूरलं समर्पयामि । ॐ दक्षिणा समर्पयामि।।
भगवते श्री चित्रगुप्त देवाय नमः

लेखनी दवात पूजन

लेखनी दवात पर शुद्ध जल, रोली, चावल, पुष्प जल आदि अर्पित करते हुये प्रभु चित्रगुप्त जी एवं धर्मराज जी का ध्यान कीजिये :

ॐ लेखनी देवते इहागच्छ । में पूजां ग्रहाण, आवाहनं करोमि।।

मषीभाजनसंयुक्तश्चरसि त्वं ! महीतले ।
लेखनी–कटिनीहस्त चित्रगुप्त नमोऽस्तुते ।। ६१ ।।
चित्रगुप्त ! नमस्तुभ्यं लेखकाक्षरदायकम् ।
कायस्थजातिमासाद्य चित्रगुप्त ! नमोऽस्तु ते ।। ६२ ।।

कायस्थ पुस्तिका

श्री चित्रगुप्त जी महाराज व्रत कथा

श्री नारायण जी चौथे अवतार श्री दत्तात्रेय जी महाराज ने ऋषि मुनियों में श्रेष्ठ व पूजनीय मुनि पुलिस्त जी से पूछा कि हे मुनि कृपया विस्तार से बताने की कृपा करे कि संसार की उत्पत्ति कैसे हुई, कायस्थ जाति की उत्पत्ति कब और कैसे हुई? प्रभु चित्रगुप्त की व्रत कथा का क्या नियम है तथा इसके करने से क्या फल मिलता है? यह जानने की मेरी तीव्र इच्छा हैं। श्री पुलिस्त मुनि ने कहा कि हे दत्तात्रेय जी अपने बहुत ही महत्त्वपूर्ण प्रश्न किया हैं, यह प्रश्न भीष्म पितामह जी ने मुझसे किया था चित्रगुप्त जी की व्रत कथा के सम्बन्ध में मैने जो पितामह को बताया था तुम भी ध्यानपूवक सुनो। एक समय संसार में शौदास नाम का एक राजा था उसका सारे भूमंडल पर राज्य था उस राजा ने समस्त राज्य में यह आज्ञा कर दी थी कि मेरी प्रजा का कोइ भी मनुष्य वेद शास्त्र को न हवन या पूजा करें। वह जब भी किसी को यज्ञ हवन या पूजा करते देखता तो उस मनुष्य को भॉति भॉति के दण्ड देता । उसके राज्य में प्रजा राजा के अन्याय से बहुत दुःखी थी। चुनांचे प्रजा के संताप से राजा शौदास पागल हो गया । राज्य करने योग्य नहीं रहा तथा पागल होकर आवारा घुमने लगा। एक समय कार्तिक सुदी २ को यम द्वितीया के दिन नगर के सब लोग रोली, चावल, फूल, चावल, पान, सुपाडी आदि पूजा की सामग्री लेकर पूजा हेतु श्री चित्रगुप्त जी महाराज के मन्दिर में इकटठा हो रहे थे। उसी समय पागल हुआ वह शौदास नामी राजा घूमता हुआ मन्दिर पर आ पहुचा। राजा को देख उसके डर के मारे वह प्रजा जो श्री चित्रगुप्त जी महाराज की पूजा को वहॉ इकटठी हो रही थी वहॉ से भाग गई और वह पूजा की सब सामग्री मन्दिर पर रही। उस शौदास नामी पागल राजा ने मन्दिर पर आकर फूल चावल आदि उस पूजा सामग्री को लेकर श्री चित्रगुप्त जी महाराज के उपर चढाकर उनकी पूजा कर दी। कुछ समय बीतने पर ~~बी~~ शौदास नामी राजा मर गया तो धर्मराज के दूत ने राजा शौदास के प्राण जीव को बॉध कर श्री चित्रगुप्त जी महाराज जी के शुभ अशुभ कर्म का विचार कर हिसाब लगाया तो उस राजा का सिवाय उस दिन के कि वह फूल, चावल आदि जिसको राजा के डर से अन्य लोग छोडकर भाग गये थे और राजा ने उन्हें श्री चित्रगुप्त जी महाराज जी के उपर छोड दिया था और कोई शुभ् कर्म नहीं पाया तब भी श्री चित्रगुप्त ने यमदूतों को आज्ञा दी कि इस राजा के जीव को विष्णुलोक में पहुचाएं, यह जीव स्वर्ग में रहेन योग्य है। श्री चित्रगुप्त जी महाराज की आज्ञा पाकर यमदूतों ने राजा के जीव को विष्णु लोक में जा पहुँचाया, परन्तु उनको श्री चित्रगुप्त जी महाराज के न्याय पर बडा अचरज हुआ कि उन्होने ऐसे पापी राजा को विष्णु लोक ~~क्यो~~ भेजा। ऐसा विचार कर वह दूत श्री धर्मराज के पास पहुचे और धर्मराज से कहा कि महाराज शौदास नामी राजा ने जीवन भर कोई शुभ कर्म नहीं किया वह नर्क में जाने योग्य था, परन्तु श्री चित्रगुप्त जी महाराज ने उसे विष्णुलोक में निवास दिया हैं। ऐसा न्याय करने से तो महराज सब नर्क लोक खाली हो जायेगा और संसारी जीव और अधिक कुकर्म करने लगेंगे। तब श्री धर्मराज ने श्री चित्रगुप्त जी महाराज से शौदास के जीव को विष्णु लोक भेजने का कारण पूछा और उसके कर्मो का लेखा मालूम किया। तब श्री चित्रगुप्त ने राजा के कर्मों का सत्य सत्य हाल बताया और कहा कि आपने और सब देवताओं ने मुझे यह आर्शीवाद दिया था कि जो कोई तुम्हारी पूजा करे वह जीव विष्णुलोक को प्राप्त करने योग्य है, चूंकि शौदास ने एक दिन मेरी पूजा की थी इसलिये राजा शौदस को मैनें विष्णुलोक भेजा है १ श्री धर्मराज श्री चित्रगुप्त जी महाराज जी की पूजा की बात सुनकर अति प्रसन्न हुये। पुलिस्त मुनि बोले कि हे दत्तात्रेय भीष्म पितामह अकेले धूप दीप से चित्रगुप्त जी की पूजा करते थे और श्री चित्रगुप्त जी ने इनको यह आर्शीवाद दिया था कि भीष्म

जी से तुम चाहते हो तुम्हारी इच्छा पूर्ण होगी और उसके पीछे आप धर्मलोक में वास करेंगे। श्री दत्तात्रेय जी ने दुनियांदारो की इच्छा पूरी होने और उनके लाभ की कथा को सुन पुलिस्त मुनि को नमस्कार किया और फिर वह स्वंय चित्रगुप्त जी का पूजा में लीन हो गये। पुलिस्त मुनि ने कहा कि जो भी मनुष्य प्रभु चित्रगुप्त जी का पूजन करता है वह न सिर्फ विष्णुलोक का अधिकारी होता है अपितु समस्त सांसारिक कष्टों से छुटकारा भी पाता है।

।। बोलो श्री चित्रगुप्त भगवान की जय ।।

श्री नारायण के चौथे अवतार श्री दत्तात्रेय जी ने श्री पुलिस्त जी से पुछा कि हे मुनि श्रेष्ठ मेरी यह जानने की तीव्र इच्छा् है कि कायस्थ् वर्ण की उत्पति कैसे हुई? कृपया विस्तार से बताने की कृपा करें। श्री पुलिस्त मुनि ने श्री दत्रात्रेय जी से कहा कि आपने बहुत ही श्रेष्ठ प्रश्न किया हैं, यही प्रश्न एक बार गंगापुत्र भीष्म ने भी किया था जों मै बताता हूं, ध्यान पूर्वक सुनो । देवलोक में ब्रह्मा जी को चिन्तित मुद्रा में देख नारद जी ब्रह्मा जी के पास पहुचे और चिन्ता का कारण पूछा। ब्रह्मा जी ने बताया कि सृष्टि रचना के उपरान्त ब्राह्मण ,क्षत्रिय, वैश्य एवं शूद्र आदि को उनके कर्मो के अनुसार फल देने का कार्य धर्मराज जी को सौपा गया था, किन्तु मृत्यु लोक में निरन्तर आबादी बढने से धर्मराज जी ने अब मुझे सकंट में डाल दिया हैं, सृष्टि बढ जाने से मनुष्य के कर्मो का लेखा जोखा रखना असम्भव हो गया है। नारद अब तुम ही कोई उपाय सुझाओं ताकि धर्मराज मृत्यु लोक का कार्य सुचारू रूप से कर सकें। नारद जी ने कहा कि हे प्रभु आपकी इस समस्सूा का समाधान तो महाप्रभु विष्णु जी के ही पास है, आपको उन्हीं का ध्यान करना चाहिये। ब्रह्मा जी महाप्रभु विष्णु जी की घोर तपस्या में लीन हो गये तथा उन्होने ११ हजार वर्षो तक तपस्या की । तदोपरान्त जब ब्रह्मा जी ने अपने नेत्रों को खोला तो सामने पाया कि अत्यन्त तेजस्वी, श्यामवर्ण, कमल नयन, चतुर्भज रूप, पीताम्बर वस्त्रों से सुशोभित, गले में रुद्राक्ष की माला को धारण किये, हाथ में कलम दवात लिये, चन्द्रमा के समान सद्रश मुख, अत्यन्त बुद्विमान एक अलौकिक उत्तम पुरूष खडा है। उत्तम पुरूष को सामने देख ब्रह्मा जी अत्यन्त हर्षित हुये तथा उन्होने पूछा कि हे पुरूषोत्तम आप कौन है, तब उन्होने बताया कि हे ब्रह्मा जी आपकी तपस्या् के दौरान ही मेरी उत्पत्ति आपकी काया से हुई है। हे तात़ कृपया मेरा नामकरण कीजिये और मेरे योग्य जो सेवा हो उसकी आज्ञा दीजिये। ब्रह्मा जी अत्यन्त प्रसन्न हुये और उस उत्तम पुरूष से कहा कि चूंकि तुम्हारी उत्पत्ति मेरी काया अर्थात शरीर से हुई है, अत: तुम कायस्थ वर्ण से जाने जाओगे तथा हमने भगवान विष्णु का ध्यान अपने चित्त में गुप्त रखकर किया था और मेरी तपस्याकाल में ही तुम आश्चर्य रूप में प्रकट हुये हो इस कारण तुम चित्रगुप्त नाम से जाने जाओगे । ब्रह्मा जी ने कहा कि हे उत्तम पुरूष आप चारों वेद, छहों, अठारह पुराणों के ज्ञाता हैं, आप प्रभु, शिवजी एवं दुर्गाजी की आराधना कीजिये और वर्णो के कर्मो का हिसाब रखिए। ब्रह्मा जी से आज्ञा पाकर चित्रगुप्त जी कुटनगर पहुंचे और वहां जाकर उन्हानें मां दुर्गा जी की उपासना की । दुर्गा जी ने श्री चित्रगुप्त जी को उनकी भक्ति से प्रसन्न होकर उन्हें लेखन कला की जानकारी दी। लेखन कला की जानकारी प्राप्त करने के पश्चात़ श्री चित्रगुप्त जी अवन्तिकापुर गये जहां उन्होने शिवजी की आराधना की तथा वहीं रहकर उन्होनें विधान तैयार किया जिसे सभी देवताओं तथा ऋषियों ने अंगीकृत किया। श्री चित्रगुप्त जी ने कार्तिक पक्ष की दुज के दिन न्याय करने का कार्यभार धर्मराज के सहायक के रूप में ग्रहण किया। इसी दिन यमराज अपनी बहन जमुना जी के घर गये थे तभी से भाई दुज की प्रथा प्रचलित हुई। इसी तिथि को यम द्वितीया भी कहा जाता है ।

कायस्थ पुस्तिका

दुज पर्व वर्ष में दो बार मनाया जाता है, कार्तिक पक्ष की दुज एवं चैत्र पक्ष की दुज की तिथियां भगवान चित्रगुप्त जी के पूजन की विशेष तिथि है। महर्षि पुलिस्त ने कहा कि संसार को कोई भी प्राणी जो दुज पर्व पर प्रभु चित्रगुप्त जी की पूजा करेगा वह इच्छित स्वर्गलोक का अधिकारी होगा। पुलिस्त मुनि श्रेष्ठ कायस्थ वर्ण उत्पत्ति का वृतान्त सुनाते हुये बताते है कि एक समय सूर्य नारायण अपनी पत्नी तथा सुशर्मा ऋषि की पुत्री शोभावती के साथ अवन्तिकापुर पहुंचे जहां उन्हानें चित्रगुप्त जी को भगवान शिवजी की अराधना में ध्यान मग्न देखा। शोभावती चित्रगुप्त जी पर मोहित हो गयी। सूर्यदेव तथा उनकी पत्नी, शोभावती की इच्छा शक्ति को भांप गये तब उन्होनें शोभावती को समझाया कि वह पार्वती का पूजन करें तभी उनको मन वांछित फल प्राप्त होगा। श्री चित्रगुप्त जी को अर्न्तयामी भी कहा गया हैं क्योकि मृत्यु लोक के असंख्य प्राणियों के जन्म मृत्यु का लेखा जोखा रखना उनके कर्मो के अनुसार फल देना आदि इत्यादि कार्य साधारण लिये सम्भव नहीं था इसलिये श्री चित्रगुप्त जी को महाप्रभु विष्णुजी का दूसरा रूप कहा गया है।

एक समय की बात है शिवजी अपनी अर्धांगिनी पार्वती के साथ् विचरण् करते हुये सूर्यलोक पहुंचे जहां उन्होने अत्यन्त सुशील, रूपवती, गुणवती, कन्या को देखकर सूर्यदेव से सारा वृतान्त कह सुनाया। भगवान शिव ने कहा के इस कन्या के लिये चित्रगुप्त जी से अधिक उत्तम और कोई वर नहीं होगा, वहीं शोभावती (इरावती) के लिये श्रेष्ठ वर है। शिवजी सूर्यदेव को साथ लेकर सुशर्मा ऋषि के पास गये तथा उन्होंने सारा वृतान्त बताया, यह सुनकर सुशर्मा ऋषि अत्यन्त प्रसन्न हुये तथा सुशर्मा ऋषि, सूर्यदेव, ब्रह्मा जी तथा समस्त देवताओं तथा अठासी हजार ऋषियों को लेकर चित्रगुप्त जी के पास गये तथा चित्रगुप्त जी का विवाह शोभावती (इरावती) के साथ कराया। सभी ऋषियों एवं विधिवत चित्रगुप्त जी का यज्ञोपवीत कराया सभी ऋषियों एवं देवताओं ने हर्षित होकर पुष्पवर्षा की । चित्रगुप्त जी के विवाह के अवसर पर सूर्यदेव की पौत्री नन्दिनी (सुदक्षिणा) भी उपस्थित थी जो मन ही मन इस विवाह को देखकर सोच रही थी कि काश मेरा विवाह भी चित्रगुप्त जी से हो जाता तो कितना अच्छा होता । भगवान शिवजी एवं ब्रह्मा जी नन्दिनी की इच्छा शक्ति को भांप गये तथा यह बात उन्होने सूर्य नारायण को बताई कि उन्हें अपनी पौत्री नन्दिनी का विवाह भी चित्रगुप्त जी के साथ कर देना चाहिये, तब श्राद्वदेव मनु की पुत्री नन्दिनी का विवाह भी सभी देवताओं एवं ऋषियों की उपस्थिति में श्री चित्रगुप्त जी के साथ सम्पन्न कराया गया तथा सभी देवताओं ने हर्षित होकर पुष्प वर्ष की ।

कायस्थ पुस्तिका

श्री चित्रगुप्त जी की पत्नी नन्दिनी (सुदक्षिणा), शोभावती (इरावती) से क्रमश: पुत्र

।। श्री चित्रगुप्त जी महाराज ।।

माथुर (भानु)
भटनागर (विभानु)
श्रीवास्तव (विश्वभानु)
सक्सैना (वीर्यभानु)

दक्षिणा नन्दिनी

सूर्यध्वजा (चारू)
अम्बष्ठ (सुचारू)
गौड (चित्राख्य)
निगम (मतिमान)
करण (हिमवान)
अस्थाना (चित्राचारू)
कुलश्रेष्ठ (अरूणा)
वालमीक (जितेन्द्री)

एरावती शोभावती

।। कायस्थ परिवार ।।
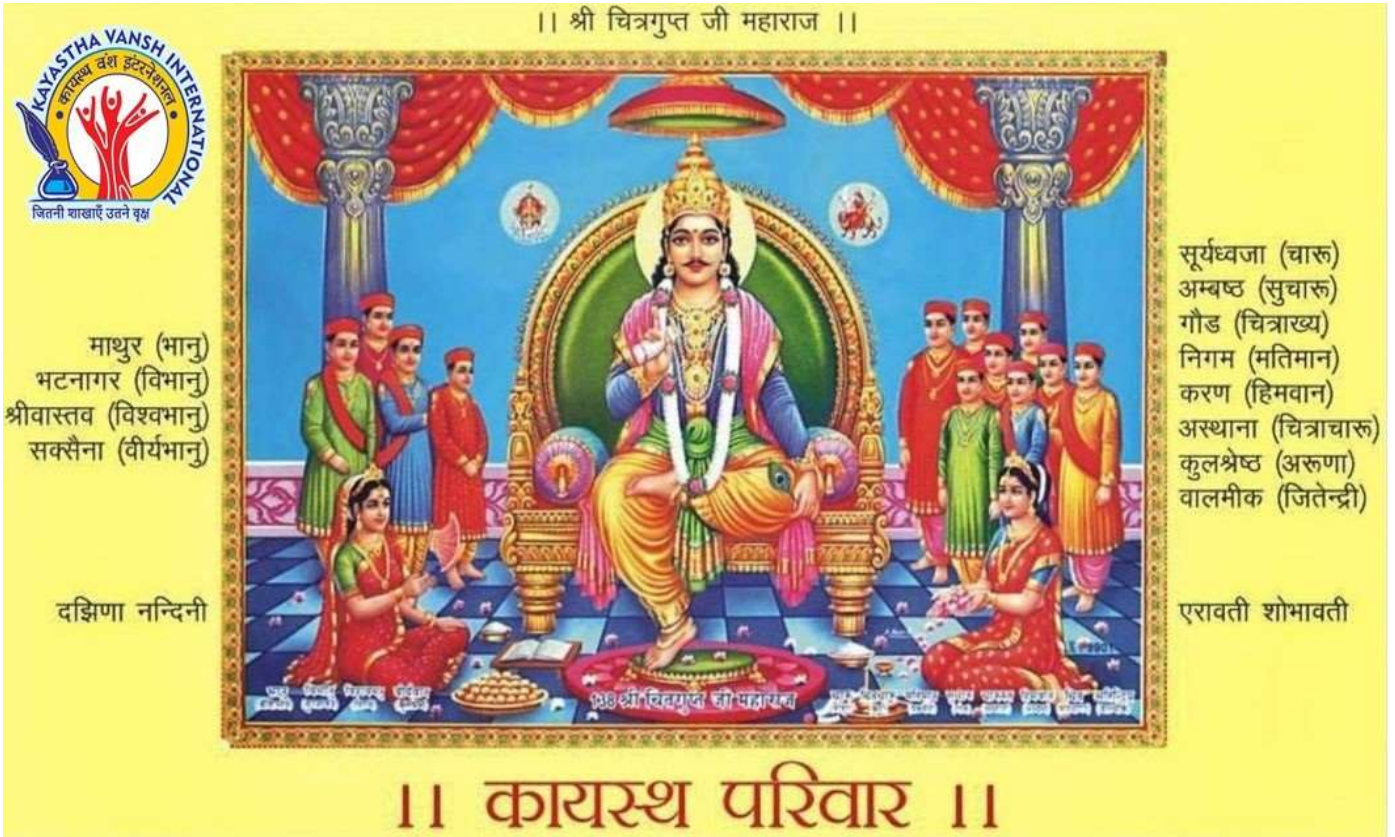
चित्रगुप्त जी के सभी पुत्रों का उपनयन (यज्ञोपवीत) संस्कार कश्यप जी के द्वारा कराया गया तथा सभी पुत्रों का विद्याध्ययन 5 वर्ष की आयु में शुरू हुआ। श्री वृहस्पति जी की छत्रछाया में सभी यथासमय सभी पुत्रों को बुलाकर उपदेश दिया कि हे पुत्रों तुम अपनी लेखन गणक वृत्ति रखना शास्त्र को अपनी जीविका ही नहीं अपितु युद्ध आदि समय में शास्त्र धारण कर युद्ध भी करना, अपने शस्त्र तो कभी न छोडना। विधा के अभाव को अपने जीवन में कभी अंदर न आने देना, देवताओं का पूजन, ब्राह्मणों का पोष्ज्ञपझा तथा उनका आदर करना ताकि तीनों लोकों का कल्याण हो। इस प्रकार उपदेश देकर सभी को विभिन्न क्षेत्रों में मृत्यु लोक भेजा जहां बारह भाई विभिन्न क्षेत्रों में जाकर बस गये।

श्री चित्रगुप्त जी गृहस्थ धर्म त्याग कर परमेश्वर की आज्ञा पाकर धर्मराज की सेवा में यमपुरी पहुंचे जहां धर्मराज ने सिहांसन से उठाकर प्रेम से चित्रगुप्त जी को हृदय से लगा लिया तथा रत्न जडित मुकुट पहनाकर सिंहासन पर बैठाया। तदोपरान्त श्री चित्रगुप्त जी अपने कार्य में तल्लीन हो गयें।

।। बोलो श्री चित्रगुप्त जी भगवान की जय ।।